सिक्किम विश्वविद्यालय
स्थापित: 2007

Volume: VII
Issue: II
Mar & Apr 2019

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

मार्च और अप्रैल के महीनों में बहुत सारी कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन किया गया जिससे हमारे छात्रों और अन्य सभी प्रतिभागियों को लाभ हुआ। मानव अधिकारों को समझने में बुद्ध की उपदेश की भूमिका पर आयोजित संगोष्ठी ने मानव मूल्यों और मानव अधिकारों के महत्व के बारे में सूचना प्रदान की।
छात्रों का उत्सव- रमाइलो एसयू- खिम ने हमारे सभी छात्रों को सूसा के तत्वावधान में आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियों और प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर दिया। हमारे प्रतिभाशाली और उज्ज्वल युवा छात्रों ने बड़े उत्साह से उन गतिविधियों भाग लिया और हम पाठ्यक्रम और सह पाठयक्रम गतिविधियों में आपकी सक्रिय प्रतिभागिता की आशा करते हैं।

कुंजिनी प्रकाश दर्नाल

इस अंक में :

संपादकीय
प्राणिविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला
इतिहास विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
मानव अधिकारों को समझने के लिए बुद्ध के उपदेशों की भूमिका पर सेमिनार
खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी पर कार्यशाला।
रमाइलो एसयू-खिम
शैक्षणिक पेपर लेखन पर कार्यशाला
:
:

प्राणिविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला

दिनांक २५ फरवरी से ९ मार्च २०१९ तक प्राणिविज्ञान विभाग "आर के उपयोग करने वाले जीवविज्ञानियों के लिए डेटा प्रबंधन और विश्लेषण" पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। यह प्रशिक्षण कार्यशाला राष्ट्रीय हिमालय अध्ययन अध्ययन (एनएमएचएस) वित्तपोषित “की इकोसिस्टम सर्विसेस एंड बायोडाइवर्सिटी कोम्पोनेंट्स इन सोशिओ-इकॉलॉजिकल लैंडस्केप्स ऑफ दार्जिलिंग - सिक्किम हिमालया : डिराइविंग मैनेजमेंट एंड पॉलिसी इनपुट्स एंड डिवैलपिंग माउंटेन बायोडाइवर्सिटी इन्फॉर्मेशन सिस्टम” शीर्षक राष्ट्रीय हिमालय अध्ययन अध्ययन (एनएमएचएस)मिशन के अंतर्गत वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित जीबी पंत हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान (जीबीपीआईएचईएसडी) के माध्यम से सिक्किम विश्वविद्यालय और अशोक शोध एवं परिस्थितिकी और पर्यावरण न्यास (एटीआरईई) के संयुक्त रूप से कार्यान्वित सहयोगी शोध परियोजना के तहत आयोजित की गयी थी। जीवविज्ञानी अक्सर अपने बड़े डेटासेट से निपटने के लिए संघर्ष करते हैं और इसलिए मजबूत विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और हाल के सांख्यिकीय उपकरणों पर ज्ञान अपने डेटासेट को समझने और व्याख्या करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मजबूत सांख्यिकीय उपकरण और पैकेज शोधकर्ताओं को अपने निष्कर्षों को अधिक प्रभावी ढंग से विश्लेषण और प्रस्तुत करने में मदद करते हैं। "आर" भाषा और इसके कई पैकेज अब कई विषयों में लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं और जैविक तथ्यों के विश्लेषण, प्रत्यक्षीकरण और व्याख्या के लिए उपयोग किए जानेवाला एक महत्वपूर्ण उपकरण है। प्रशिक्षण कार्यशाला उद्देश्य प्रतिभागियों को "आर" सॉफ्टवेयर का परिचय करना और बुनियादी विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों या पैकेजों को जैविक डेटा पर जोर देने के लिए था । कार्यशाला में "आर" प्रोग्रामिंग, डेटा प्रबंधन और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की मूल बातें शामिल करने की मांग की गई।

Mailing Address: suchronicle@cus.ac.in

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

इतिहास विभाग ने दिनांक ५ मार्च २०१९ को सिक्किम विश्वविद्यालय में "ग्रामीण संसाधनों के शासन के अतीत और वर्तमान : जापान और भारत के तुलनात्मक संस्थागत विश्लेषण" पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्घाटन सत्र दिनांक ५ मार्च को विश्वविद्यालय के कावेरी हॉल में आयोजित किया गया था, उदघाटन सत्र की अध्यक्षता सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के डीन प्रो. एन.के.पासवान ने की। समारोह के मुख्य अतिथि हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रो.अलटूरी मुरली थे। मुख्य भाषण प्रो. ताकुशी सकुराई, टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान द्वारा दिया गया था। जापान के विश्वविद्यालयों, और संस्थानों, ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी यूएसए, लॉक हेवन यूनिवर्सिटी पेंसिल्वेनिया यूएसए, हैदराबाद, गुवाहाटी और सिक्किम विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने विषय पर आयोजित दो दिवसीय विचार-विमर्श में भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य यह अध्ययन करना था कि कैसे लोग और राज्य भारत और जापान में विभिन्न सामान्य संपत्ति संसाधनों को देखते थे और उनका उपयोग करते थे। पुराने समय से लोग प्राकृतिक संसाधनों जैसे भूमि, जल, जंगल आदि का उपयोग अपने अस्तित्व और आजीविका के लिए करते आ रहे हैं और राज्य ने ऐसे संसाधनों पर लोगों के अधिकार को मान्यता दी है। सम्मेलन ने भारत और विदेश के क्षेत्र में काम करने वाले शोधकर्ताओं को एक मंच प्रदान करने पर चर्चा की और दोनों भारत और जापान के बीच समानता और मतभेदों पर विचार-विमर्श करने के साथ-साथ विभिन्न नीतियों के प्रभाव के बारे में अंतर्दृष्टि का योगदान करने के लिए भी कहा। सेमिनार में चर्चा के लिए भारत में ब्रिटिश काल के दौरान बंजर भूमि और आम भूमि, भारत में स्वतंत्रता के बाद की अवधि के सामान्य संसाधन गुण, चरागाह भूमि/चारागाह भूमि, जापान में सामान्य संसाधन उचितता, वन और सरकार की वन नीतियां आदि कुछ उप विषय थे। सम्मेलन ६ मार्च २०१९ को समाप्त हुआ।

वियतनाम के राजदूत ने सिक्किम विश्वविद्यालय का दौरा किया।

महामहिम फाम शानचू ने दिनांक २८ मार्च २०१९ को बराद सदन में "भारत की एक्ट ईस्ट नीति के संदर्भ में वियतनाम भारत संबंध" विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया जिसमें विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया। महामहिम फाम शानचू ने कहा कि वियतनाम में शांति, मित्रता, सहयोग और विकास के लिए एक सुसंगत नीति है और एक मित्र, एक विश्वसनीय साथी और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के एक जिम्मेदार सदस्य के रूप में कार्य करता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि वियतनाम-भारत संबंध का इतिहास तीन सिद्धांतों पर आधारित है, जो लंबे समय से चली आ रही पारंपरिक मित्रता, उच्च स्तरीय राजनीतिक विश्वास और सामरिक हितों के अभिसरण हैं। माननीय कुलपति प्रो। अविनाश खरे ने भारत-वियतनाम संबंधों के विकास पर बात की और कहा कि दोनों देशों ने २००७ में २०१६ में एक व्यापक साझेदारीके लिए रणनीतिक साझेदारी से स्पष्ट रूप से सहयोग के लिए एक तालमेल बनाया है। वियतनाम के राजदूत ने सिक्किम का दौरा किया विश्वविद्यालय। महामहिम फाम शंखचू ने २८ मार्च २०१९ को बारादसन में "भारत की अधिनियम पूर्व नीति के संदर्भ में वियतनाम भारत संबंध" पर एक विशेष व्याख्यान दिया, जिसमें विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया। महामहिम फाम सनाचू ने कहा कि वियतनाम के पास शांति, मित्रता, सहयोग और विकासके लिएएक सुसंगत नीति है और एक मित्र, प्रशंसनीय भागीदार और अंतर्राष्ट्रीयसमुदाय के एक जिम्मेदार सदस्य के रूप में कार्य करता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि वियतनाम का इतिहास और आधार- भारत संबंध तीन सिद्धांतों पर आधारित है, जो लंबे समय से चलीआ रही पारंपरिक मित्रता, उच्च स्तरीय राजनीतिक विश्वास और सामरिक हितों के अभिसरण हैं। माननीय कुलपति प्रो. अविनाश खरे ने भारत-वियतनाम संबंधों के विकास पर बात की और कहा कि दोनों देशों ने २००७ में रणनीतिक साझेदारी से २०१६ में एक व्यापक भागीदारी के रूप में स्पष्ट सहयोग के लिए तालमेल बनाया है।

"मानव अधिकारों को समझने में बुद्ध के उपदेशों की भूमिका" विषय पर सेमिनार

सिक्किम विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) भारत द्वारा संयुक्त रूप से "मानव अधिकारों को समझने में बुद्ध के उपदेशों की भूमिका" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया और संगोष्ठी का उद्घाटन राज्य पर्यटन विभाग के सम्मेलन हॉल में किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति प्रो. इर्शाद गुलाम अहमद ने की और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एनएचआरसी के सदस्य सुश्री ज्योतिका कालरा थीं। भारत भर के शिक्षाविदों, इतिहासकारों, लेखकों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने सेमिनार में भाग लिया, और सभी इस बात पर एकमत थे कि बुद्ध के उपदेश मानव अधिकारों की आधुनिक अवधारणा में भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि बुद्ध ने मानव को अपने स्वयं के आंतरिक ब्रह्मांड को बदलकर युद्धों और मानव अधिकारों के उल्लंघन पर काबू पाने के लिए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन किया था। सुश्री ज्योतिका कालरा ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में बौद्ध धर्म के प्रकाश को जीवित रखने के लिए भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार भीम राव अंबेडकर को श्रेय दिया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि आधुनिक दुनिया में मानव अधिकारों के लिए संघर्ष के लिए मानवता के लिए बौद्ध दृष्टिकोण से संबंधित प्रयास करना आवश्यक था। मुख्य भाषण प्रख्यात हिंदी लेखक और कवि और साहित्य अकादमी पुरस्कार के विजेता श्री अरुण कमल द्वारा दिया गया था। शैक्षणिक सत्रों में भारत के विभिन्न प्रांत के प्रख्यात शिक्षाविदों, इतिहासकारों, वरिष्ठ नौकरशाहों और लेखकों ने भाषण प्रदान किया।

खगोल शास्त्र एवं खगोल भौतिकी पर कार्यशाला

भौतिकी विभाग ने दिनांक 29 मार्च से 31 मार्च 2019 तक "खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी" पर तीन दिवसीय आईयूसीएए कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 29 मार्च को बराद सदन के सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया था। कुलपति प्रो. अविनाश खरे ने प्रतिभागियों और स्रोत विद्वानों का स्वागत किया और इस तरह की कार्यशालाओं के महत्व पर भी बल दिया। आईयूसीएए के प्रो. धुब जे. सैकिया ने देश में खगोल विज्ञान के विकास पर प्रकाश डाला और इसके साथ ही कई अगली पीढ़ी की अंतर्राष्ट्रीय दूरबीनों में जगह और भागीदारी के लिए कई प्रमुख अवलोकन सुविधाओं को शामिल किया गया। कार्यशाला के स्रोत विद्वानों के रूप में आईयूसीएए से प्रो. डी. जे, सैकिया, आईआईटी गुवाहाटी से प्रो. देवाशीष बोरा, कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी से प्रो. सुकान्त देव, आईयूसीएए से प्रो. कनक साहा और उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय से प्रो. बिकाश पॉल उपस्थित थे।

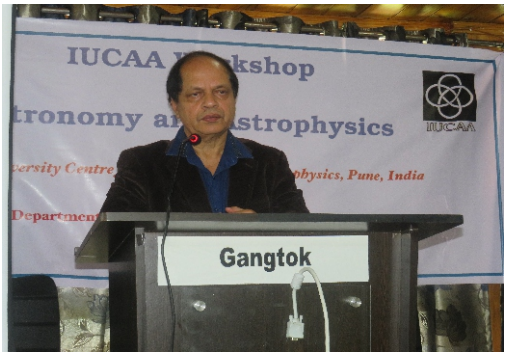

रमाइलो एसयू -खिम

रमाइलो एसयू-खिम विश्वविद्यालय के छात्र निकाय -सिक्किम विश्वविद्यालय छात्र संघ (सूसा) द्वारा आयोजित एक उत्सव है। उत्सव के दौरान विभिन्न कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है और छात्र उनमें बहुत उत्साह के साथ भाग लेते हैं। इस वर्ष रमाइलो एसयू-खिम दिनांक 8 मार्च से 23 अप्रैल 2019 तक आयोजित किया गया था। उत्सव के दौरान विभिन्न खेल, सांस्कृतिक और कला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। सूसा ने बीमार लड़की बंदना लिम्बू, जिनकी नई दिल्ली में चिकित्सा चल रही है, की भी मदद करने के लिए कुछ राशि संग्रह करने हेतु अनुरोध किया।

शैक्षणिक पेपर लेखन पर कार्यशाला

शिक्षा विभाग ने दिनांक ६-८ मार्च २०१९ से शैक्षणिक पेपर लेखन और शिक्षा और सामाजिक विज्ञान में संदर्भ लेखन पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन सत्र ६ मार्च को बराद सदन में आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता कुलसचिव श्री टी.के. कौल ने की। मुख्य भाषण सुश्री मधु कुशवाहा, शिक्षा विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया था।

शैक्षणिक पेपरों को कुशलता से लिखना शैक्षणिक जगत में दक्षता का प्रतीक है। यह एक पेशेवर छवि प्रस्तुत करता है और साथ ही यह ज्ञान क्षेत्र में योगदान देता है। शैक्षणिक लेखन अभिव्यक्ति की एक शैली को संदर्भित करता है जो शोधकर्ता अपने विषयों की बौद्धिक सीमाओं और उनकी विशेषज्ञता के विशिष्ट क्षेत्रों को परिभाषित करने के लिए उपयोग करते हैं। शैक्षणिक लेखन में सबसे सामान्य उद्देश्य समझना, विश्लेषण करना, संश्लेषित करना और सूचित करना है और किसी भी शोध कार्य को वैज्ञानिक निष्पक्षता और स्पष्टता के साथ रिपोर्ट करने की आवश्यकता है। कार्यशाला का ध्यान विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक लेखन और संदर्भों पर था। कार्यशाला ने वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, प्रेरक और आलोचनात्मक लेखन की एक वैज्ञानिक शैली को प्रस्तुत करने की भी मांग की। कार्यशाला में दक्षिण बिहार विश्वविद्यालय, गया, बर्दवान विश्वविद्यालय, विश्वभारती विश्वविद्यालय, नेहु, शिलांग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम विश्वविद्यालय के कुल ३३ प्रतिभागी के रूप में थे।